https://archive.org/details/bk690/page/n0/mode/1up

2014 -Narendra Modi -Ek Shakshiyat Ek Daur -Relevant Pages Only (690)

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

tidar.com

Full Library on https://realpatidar.com/library

TRANQUEBAR

नरेंद्र मोदी

एक शख्सियत, एक दौर

नीलांजन मुखोपाध्याय

अनुवादः खरे व कुमार

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

Real Patidar
Unravel Truth

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar’s mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

Use the Bookmarks facility in the PDF to directly go to the pages containing Highlights.

For Reference See Pages: 2, 7, 8.
For page numbers, see the page footer. Page numbers are in 'Page x of y' format

References by: RealPatidar.com - Created using: step2-QR-and-3-RM-v5.py

https://archive.org/details/bk690/page/n2/mode/1up

Digitally signed by realpatidar.com
DN: cn=realpatidar.com, c=IN, o=realpatidar.com, email=mail@realpatidar.com
Reason: I have reviewed this document
Date: 2026.02.19 13:28:14 +05'30'

realpatidar.com

TRANQUEBAR

नरेंद्र मोदी

एक शख्सियत, एक दौर

नीलांजन मुखोपाध्याय

अनुवादः खरे व कुमार

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n3/mode/1up

realpatidar.com

See Dargah Photo after Page 180
See Pages 271 & 272

ट्रैंकेबार

नरेंद्र मोदी

नीलांजन मुखोपाध्याय ने 1980 के दशक की शुरुआत में ही, कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़कर पत्रकारिता को अपना कैरियर बना लिया था। आपने कई अखबारों और पत्रिकाओं के लिए काम किया, जैसे *द इकोनॉमिक टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, आउटलुक* और *द स्टेट्समैन*। संप्रति आप लोकसभा टीवी पर एक साप्ताहिक कार्यक्रम 'ए पेज फ्रॉम हिस्ट्री' प्रस्तुत कर रहे हैं।

आपकी अन्य किताब *द डेमोलिशनः इंडिया एट द क्रॉसरोड* 1994 में प्रकाशित हो चुकी है। आप नाटक भी लिखते हैं और आपके लिखे एक नाटक को प्रमुख थियेटर ग्रुप द्वारा मंचित भी किया जा चुका है। आप दिल्ली और उत्तर प्रदेश की सीमा पर रहते हैं।

खरे एक दशक से भी लंबें समय से अनुवाद और संपादन कार्य में सक्रिय हैं।

कुमार, कई दशकों से अपना अविरल संरचनात्मक सहयोग अनुवाद कार्य को देते आ रहे हैं।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n4/mode/1up

realpatidar.com

नरेंद्र मोदी

एक शख्सियत, एक दौर

नीलांजन मुखोपाध्याय

अनुवाद
खरे व कुमार

यात्रा बुक्स

TRANQUEBAR

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n5/mode/1up

2014 -Narendra Modi -Ek Shakshiyat Ek Daur -Relevant Pages Only (690)

realpatidar.com

ट्रैंकेबार प्रेस
वैस्टलैंड लिमिटेड के अंतर्गत प्रकाशित

61, सिल्वरलाइन अलपक्कम मेन रोड, मदुरावोयल, चेन्नई-600095
नं. 38/10 (नया नं. 5), राघव नगर, न्यू टिंबर यार्ड लेआउट, बैंगलुरु-560026
93, प्रथम मंज़िल, शाम लाल रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

अंग्रेजी का प्रथम संस्करणः *नरेंद्र मोदीः द मैन, द टाइम,* टैंकेबार, वैस्टलैंड लिमिटेड, 2013
हिंदी का प्रथम संस्करणः वैस्टलैंड लिमिटेड, यात्रा बुक्स के सहयोग से, 2014

कॉपीराइट © नीलांजन मुखोपाध्याय 2014

सर्वाधिकार सुरक्षित
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

आई.एस.बी.एन : 978-93-83260-05-8

नीलांजन मुखोपाध्याय दृढ़तापूर्वक अपने नैतिक अधिकार व्यक्त करते हैं कि उनकी पहचान इस पुस्तक के लेखक के रूप में हो।

टाइपसेटः अर्चना प्रिंटर्स, ईस्ट रामनगर, शाहदरा, दिल्ली-32, मोबाइल : 9811357243
मुद्रकः राज प्रेस, नई दिल्ली-110012

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय है कि प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता। इसका जिल्दबंद या खुले या किसी भी अन्य रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिकी, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी तरीके से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी और पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n6/mode/1up

realpatidar.com

अनुक्रम

आभार ix

1. परिचय 1
2. बचपन के सबक 17
3. भारत के बिखरते रंग 29
4. असहमतियों का दौर 44
5. बेहिसाब दंगे 70
6. दीक्षा 86
7. बदलती गतिविधियां 113
8. महंगी पड़ी जीत 132
9. दोहरा व्यक्तित्व--अनावरण प्रारंभ 164
10. गुजरात का पासवर्ड 186
11. कोच एस-6, साबरमती एक्सप्रेस 220
12. मोदी कुर्ता 242
13. पहचान का मतलब 256
14. भीतरी शत्रु 269
15. विकास सूत्र 289
16. यहां से आगे--मंजिलें और भी हैं 322
17. संदर्भ 332

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n7/mode/1up

realpatidar.com

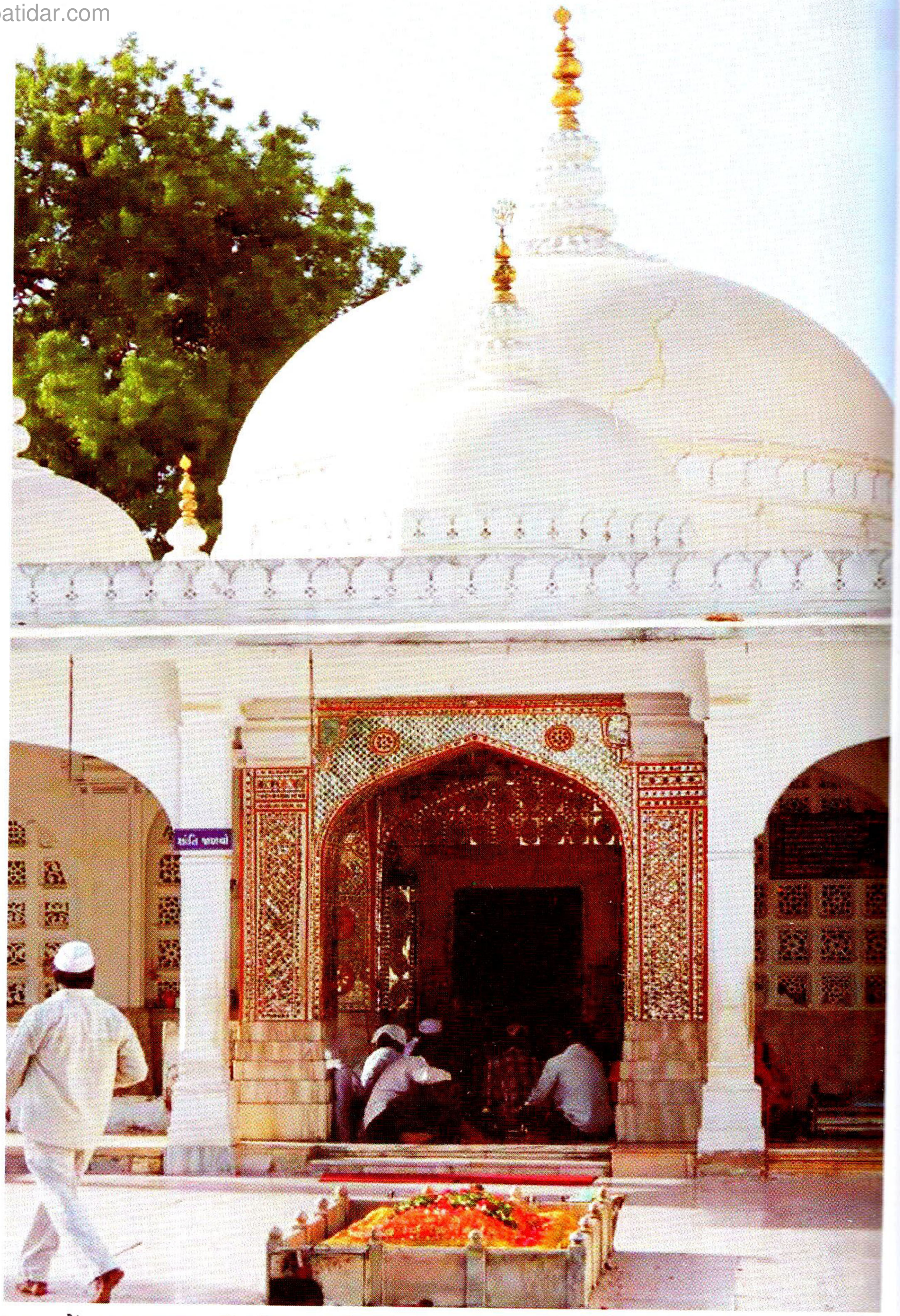

2012 में अहमदाबाद की सीमा पर पिराना दरगाह। *फोटो साभारः नीलांजन मुखोपाध्याय*

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n8/mode/1up

realpatidar.com

इफ्तार पार्टी नहीं करती क्योंकि वे इसे एक तरह की तुष्टीकरण के रूप में देखते हैं। हालांकि, अगस्त 2012 में ईद-उल-फितर के अवसर पर मुसलमानों के लिए मोदी का एक बधाई संदेश ट्वीट जरूर हुआ था। फिर भी सार्वजनिक स्थलों और समारोहों में अपनी व्यक्तिगत वरीयताओं के अनुसार हिस्सा लेने की मुसलमानों को अनुमति न देने की सामाजिक आम सहमति दर्शाती है कि उनकी पहचान के प्रदर्शन पर यह अपवाद नहीं बल्कि एक प्रकार से नियंत्रण है। ये सभी मोदी के आने के बाद के बदलाव नहीं हैं। लेकिन 2002 से दोनों पक्षों के मध्य अंतर और गहराया है जो यह जताता है कि मौजूदा खाई को चतुराई से बनाए रखा गया है।

दूसरी जगह है, गुजरात में अहमदाबाद के बाहरी इलाके में स्थित पिराना तीर्थ। इसके अनुयायियों की पुश्तैनी जड़ें कच्छ में हैं जो गोधरा कांड के बाद हुई हिंसा के बाद अंतर-सामुदायिक संबंधों में आए बदलाव की गवाही देता है। यह संप्रदाय कोई पांच सौ साल पहले इमाम शाह के द्वारा इस्लाम से इतर स्थापित किया गया, जिन्हें सूफी संत कहा गया। शुरू में उनके अनुयायी कच्छ के अंजर तालुका के पटेल समुदाय से बने और इन अनुयायियों को सत्यपंथियों का नाम दिया गया। जिन्होंने इस्लामिक प्रथाओं और हिंदू परंपराओं को आपस में जोड़कर अपना अलग संप्रदाय विकसित किया। और इस तरह इमाम शाह के मुस्लिम अनुयायी 'सईद' के साथ पटेल एकीकृत हो गए। ये अपनी धार्मिक व्यवस्था को लोकतांत्रिक तरीके से चलाते थे जिसमें सभी प्रमुख निर्णय एक प्रशासनिक परिषद लेती थी। दस लोगों की इस परिषद में सात पटेल और तीन सईद शामिल होते थे। इमाम शाह के इन उत्तराधिकारियों को काका कहा जाता था और इनका चयन पिछले पांच शताब्दियों से भी अधिक समय से पारस्परिक परामर्श के द्वारा किया जाता था।

जल्द ही कई अन्य समुदायों के जैसे सत्यपंथी भी हिंदुओं-मुसलमानों से अलग एक छोटे से तीसरे धार्मिक समूह के रूप में उभरे। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में सत्यपंथियों के बाहरी होने की स्थिति पर कई कारणों से दबाव पड़ने लगाः पटेल अनुयायियों की इस भावना के अनुरूप और तत्कालीन 'काका' का इस संप्रदाय के 'हिंदू रंग' पर अधिक से अधिक जोर देना और 'प्रत्येक सदस्य को राजनीतिक हिंदू के रूप में' स्थापित करना सबसे महत्वपूर्ण बात थी। और तो और जिस मकबरे को अब तक दरगाह कहा जाता था उसको भी बार-बार देवतुल्य 'श्री निष्कलंकी नारायण भगवान' का मंदिर कहा जाने लगा और इसके चारों ओर हिंदू रूपांकनों से सजावट होने लगी। गर्भगृह के अंदर जहां इमाम शाह का मकबरा स्थित है वहां होने वाले रस्म-रिवाज भी हिंदू तौर-तरीके से किए जाने लगे। जबकि 1997 में कच्छ में 'अंतर-सामुदायिक संबंध एक अध्ययन' के हिस्से के फलस्वरूप जब मेरा इस मकबरे पर जाना हुआ तो वहां मैंने नियमित भक्तों के बीच सईदों को भी पाया।

लेकिन 2012 में ऐसा नहीं था और वहां बहुत-कुछ बदल गया था। इस दरगाह

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n9/mode/1up

2014 -Narendra Modi -Ek Shakshiyat Ek Daur -Relevant Pages Only (690)

realpatidar.com

का मुख्य द्वार, जिस पर इस्लामी वास्तुकला का प्रभाव स्पष्ट था और जो एक विशिष्ट मध्ययुगीन संरचना थी उसे बंद किया जा चुका था। तीर्थ में प्रवेश के लिए अब एक विशाल अलंकृत द्वार था जैसा हिंदू मंदिरों में होता है। दरगाह के अंदर कब्र के अलावा बाकी सब चीजों पर हिंदू रंग चढ़ चुका था। सईद लोग क्यों नजर नहीं आ रहे और पुराना द्वार भी बंद है, मेरे इस सवाल पर झुंझलाकर काका बोले, सईद लोग तो यहां पिछले एक दशक में आना कम कर चुके हैं। लेकिन उनकी 'उपस्थिति' से समस्याएं बढ़ती हैं खासकर, मोदी को। जबकि सितंबर 2002 में मोदी ने सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए एक सद्भावना मिशन का आयोजन किया जैसा अतीत में कई भारतीय राजनीतिक नेता धर्मनिरपेक्षता के उचित प्रतीकों के स्वरूप के साथ आयोजन कर चुके थे। लेकिन मोदी ने मुसलमानों को किसी भी तरह का सार्वजनिक संकेत नहीं दिया। हालांकि मोदी ने शॉल स्वीकार किया था मगर मुसलमानों की टोपी को पहनने से इनकार करने के बाद सद्भावना मिशन सुर्खियों में आ गया। मीडिया ने एक सूफी नेता मौलवी--सैयद इमाम शाही सईद के नाम पर रपट दी। जबकि वह सत्यपंथियों की शासी परिषद के एक निष्कासित सदस्य थे। इसके कारण अब सईद किसी मुसलमान की तरह अधिक और एक विद्रोही संप्रदाय के अनुयायी की तरह कम बोलते हैं। उन्होंने पत्रकारों से कहा, 'मोदी के टोपी को स्वीकार न करने से मेरा नहीं इस्लाम का अपमान हुआ।' भाजपा प्रवक्ता विजय रूपणी का तर्क वही था जो मोदी ने मुझसे एक साक्षात्कार में कहा था, 'नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट कहा है कि उनकी नीति अन्य दलों के विपरीत समाज के एक वर्ग के तुष्टिकरण की नहीं है, बल्कि हमारा प्रयास सभी के लिए विकास और हर किसी को बराबरी का दर्जा देने का है।'

कच्छ में समाज डेढ़ दशक से भी कम समय में ऐसा बंटा जिसे फिर पहले जैसा करना मुश्किल हो गया। इसी प्रकार पिराना दरगाह ने अपना नाम और अपना आध्यात्मिक बहुलवाद खो दिया और उसके अनुयायियों की एक बड़ी संख्या को उसी आस्था की ओर मुड़ना पड़ा जहां उसके संस्थापक इतर हुए थे। हालांकि, गुजरात में इन घटनाओं की शुरुआत मोदी युग से पहले हो चुकी थी लेकिन यह जिस तीव्र गति से और शायद अपरिवर्तनीय स्तर तक उनके कार्यकाल में पहुंची कि जब 'हममें' और 'उनमें' सबसे अधिक विलगाव दिखा। जब इस जीवनी पर काम करना शुरू किया तो इस बात को जानता था कि 1997 में गुजरात में मैंने जो विसंवाद पनपता देखा उसे व्यापक अत्याचारों ने और विस्तार दे दिया है। जिस कठोरता के साथ राज्य में विलगाव को हवा दी गई थी, मुझे यकीन है कि उससे जुड़े कई किस्से भी उपजे होंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए मैं अपने 'मोदीनामा' के लिए जिस कहानी की तलाश में था उससे न भटकूं, मैंने जानबूझकर केवल पिराना दरगाह और कच्छ तक अपनी यात्रा को सीमित करने का फैसला किया जबकि गुजरात में आध्यात्मिक विविधता के लिए और भी स्थान जाने जाते थे। दोनों जगहों के लिए मेरे पास निशानदेही करने के कुछ बिंदु

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk690/page/n10/mode/1up

realpatidar.com

नीलांजन मुखोपाध्याय की किताब *नरेंद्र मोदीः एक शख्सियत, एक दौर* 'वस्तुनिष्ठ और बेहतरीन शोध' है।
—रामचंद्र गुहा, इतिहासकार और लेखक

मोदी का बचपन कुछ अलग था; अपने दोस्तों की टोली में वह इकलौते थे जिनके पिता चाय की दुकान चलाते थे और मोदी उनका हाथ बंटाया करते थे।

आर.एस.एस. और हेडगेवार भवन के शुरुआती दिनों में, पहलेपहल मोदी को जो काम दिया गया उसके बारे में उन्होंने बड़ी सरलता से बताया: 'मेरे जिम्मे सबसे पहले कार्यालय की सफाई का काम आया। जब उन्हें भरोसा हो गया कि मैं यह काम बखूबी कर सकता हूं तब कहीं चाय बनाने का काम दिया गया...'

'मुझे वाकई नहीं पता कि क्यों यह इतना फैशनेबल बना दिया गया—इसे तो मैंने अपने लिए तैयार किया था। अब तो यह मार्केट में भी मिल जाता है... यहां तक कि यूरोप और अमेरिका में भी यह मोदी कुर्ते के नाम से जाना जाता है...'

आवरण चित्र सौजन्यः www.narendramodi.in

978-93-83260-05-8

जीवनी
₹ 250

TRANQUEBAR
westlandbooks.in
यात्रा

9 789383 260058

realpatidar.com